इलाहाबाद विश्वविद्यालय

QUOT RAMI TOT ARBORES

यावत्यः शाखास्तावन्तो वृक्षाः

राष्ट्रीय संगोष्ठी

26-27 नवम्बर 2024

स्वामी दयानंद : द्विशताब्दी स्मरण

आयोजक

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

IQAC, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

इस विभाग की स्थापना सन् 1924 ई. में हुई थी। हिंदी भाषा और साहित्य के गम्भीर अध्येता डॉ. धीरेंद्र वर्मा इस विभाग के संस्थापक अध्यक्ष थे। यह विभाग अपने अध्यापकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की प्रतिभा, ज्ञान एवं उपलब्धियों से देश भर में प्रतिष्ठा का पात्र रहा है। देश भर में विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी शिक्षण के पाठ्यक्रम एवं स्वरूप निर्धारण में इस विभाग की केन्द्रीय भूमिका रही है। रचनात्मक लेखन एवं ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों में इस विभाग की उपलब्धियाँ स्वयंसिद्ध हैं। हिंदी आलोचना, साहित्येतिहास लेखन एवं शोध के क्षेत्र में डॉ. धीरेंद्र वर्मा, डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा, डॉ. पारसनाथ तिवारी, डॉ. रघुवंश, डॉ. कामिल बुल्के, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र,डॉ. दूधनाथ सिंह; भाषा विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. उदयनारायण तिवारी, डॉ. रामसिंह तोमर, डॉ. हरदेव बाहरी; पाठ संपादन के क्षेत्र में डॉ. माता प्रसाद गुप्त, तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में डॉ. मोहन अवस्थी, नाटक-एकांकी के क्षेत्र में डॉ. रामकुमार वर्मा, नई कविता के क्षेत्र में डॉ. जगदीश गुप्त और समकालीन कविता के क्षेत्र में डॉ. राजेंद्र कुमार आदि का योगदान हिंदी की अकादमिक दुनिया में कीर्तिस्तम्भ के रूप में सर्वस्वीकृत है। रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में भी इस विभाग के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ महनीय हैं। शमशेर बहादुर सिंह, दुष्यंत कुमार, कमलेश्वर, मार्कंडेय, धर्मवीर भारती, ज्ञानरंजन, अब्दुल बिस्मिल्लाह, वीरेन डंगवाल, अखिलेश जैसे लेखकों का इस विभाग से जुड़ाव रहा है। हिंदी विभाग इस उन्नत एवं गौरवशाली परम्परा की स्मृतियों को संरक्षित रखते हुए मौजूदा समय में नवीन ज्ञान के सृजन एवं प्रसार के लिए कटिबद्ध है।

स्वामी दयानंद : द्विशताब्दी स्मरण

सदियों की मोहनिद्रा के पश्चात उन्नीसवीं सदी के मध्य में नवजागरण, धार्मिक एवं सामाजिक सुधार के जिन आंदोलनों का सूत्रपात भारत में हुआ उनमें स्वामी दयानंद (1824-1883) के आर्य समाज का प्रमुख स्थान है। आर्य समाज की स्थापना युगीन आवश्यकताओं और चुनौतियों के सापेक्ष हुई थी। भारत में व्यापार के लिए आई पश्चिमी शक्तियाँ अठारहवीं सदी से ही राजनीति और सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप करने लगी थीं। उन्होंने भारत के प्रशासनिक और आर्थिक ढाँचे को समाप्त कर सामाजिक संरचना को गहराई से प्रभावित करना शुरू कर दिया था। पश्चिम की श्रेष्ठता का उद्घोष करते हुए वे भारत की उन्नति का रास्ता पश्चिम मात्र को ही सिद्ध करना चाहते थे। दूसरी ओर भारतीय समाज अनेक तरह की जड़ताओं और गतानुगतिकताओं में फँसा हुआ था। स्वामी दयानंद ने उस विपरीत और चुनौतीपूर्ण समय में भारत की उन्नति का रास्ता भारत की ज्ञान-परंपरा में तलाशा। उन्होंने पश्चिमी ज्ञान और पश्चिम की भाषा पर भरोसा करने की बजाय भारतीय मनीषा और भारतीय भाषाओं में सन्निहित अगाध क्षमता पर विश्वास किया और 'आर्य समाज' के रूप में विशाल जन-आंदोलन खड़ा कर दिया।

स्वामी दयानंद ने भारतीय समाज की समस्याओं को गहराई से देखा। उनके कारणों की यथार्थपरक खोज की और अपनी विवेक दृष्टि से गतिरोध को दूर कर समाज को मौलिक

सृजनशीलता से प्रेरित करने में समर्थ हो सके। उनका स्वप्न था कि भारतीय समाज अपनी अधोगति से मुक्त होकर नई रचनात्मक क्षमताओं से गतिशील हो। उन्होंने भारतीय संस्कृति के आदि स्रोत तक जाकर उसकी आंतरिक शक्ति और ऊर्जा का अन्वेषण किया। सामाजिक कुरीतियों और मिथ्या रूढ़ियों के निवारण, पाखंड-खंडन, अंधविश्वास से मुक्ति, स्त्रीशिक्षा, बाल-विवाह निषेध, विधवा-विवाह, अछूतोद्धार, सामाजिक न्याय और समता की स्थापना के लिए उनका योगदान स्थायी और ऐतिहासिक महत्त्व का है। उन्होंने भारतीय जनता में आत्मगौरव एवं राष्ट्रीयता की भावना का संचार जिस रूप में किया, वह अतुलनीय है। और, इसके लिए उन्होंने भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिंदी को माध्यम बनाया। स्मरण रहे कि स्वामी दयानंद की मातृभाषा गुजराती थी, संस्कृत के वे प्रकांड ज्ञाता थे, बावजूद देश को जोड़ने के लिए उन्होंने हिन्दी में लेखन, भाषण और शास्त्रार्थ किया। उनके इन प्रयत्नों ने कालांतर में हिंदी अस्मिता की नींव तैयार करने में मदद पहुँचाई।

आज भी स्वामी दयानंद के विचार प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण हैं। उनके सांस्कृतिक मूल्यों की अवधारणा, मानव धर्म की व्यापक प्रतिष्ठा तथा सृजनशीलता से संबंधित है। उतना ही महत्वपूर्ण है उनके व्यक्तित्व की क्रांतिकारिता, जो असत्य और अन्याय के सम्मुख अडिग खड़े होने की शक्ति प्रदान करती है। स्वामी दयानंद के जरिए हम भारतीय ज्ञान-परंपरा की श्रेष्ठ उपलब्धियों से परिचित होते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि तर्क और विवेक के साथ स्वामी दयानंद के विचारों से जुड़ें। यह संगोष्ठी इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

संगोष्ठी के उपविषय

- स्वामी दयानंद का शिक्षा-दर्शन
- स्वामी दयानंद की लोकतंत्र की अवधारणा
- आर्य समाज और महात्मा गांधी
- स्वामी दयानंद और वैदिक साहित्य
- ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज और आर्यसमाज
- आर्यसमाज की हिंदी पत्रकारिता
- आर्यसमाज और स्त्रीशिक्षा
- आर्यसमाज और हिंदी भाषा
- आर्यसमाज और स्वाधीनता आंदोलन
- आर्यसमाज और समाज सुधार आंदोलन
- आर्य समाज और जाति का प्रश्न
- आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाएं
- आर्यसमाज और नवजागरण
- आर्यसमाज और दक्षिण भारत
- आर्यसमाज और उर्दू भाषा
- आर्यसमाज के प्रमुख स्तंभ

संरक्षक

प्रो. संगीता श्रीवास्तव

कुलपति

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

अध्यक्ष

प्रो. लालसा यादव

विभागाध्यक्ष, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

संयोजक

डॉ. अमृता

सहायक आचार्य, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

संगोष्ठी के लिए आलेख/शोधालेख 15 नवम्बर 2024 तक भेजे जा सकते हैं। सेमिनार के लिए पंजीयन शुल्क : विद्यार्थी - 300 रु., शोधार्थी - 600 रु., शिक्षक एवं अन्य प्रतिभागी - 900 रु.।

पंजीयन हेतु
QR कोड स्कैन करें

या

Google Form Link : https://forms.gle/d2icskTAQWSkE9Xa9 पर पंजीयन करें

सम्पर्क : 9411407594/swamidayanandseminar@gmail.com